सुन्दरबाई अन्तरगत कहे, प्रकास वचन अति भारी जी।
साथ वचन ए चित्त दे सुनियो, देखियो तारतम विचारी जी।। २ ।।

सुन्दरबाई (श्यामाजी) अन्दर बैठकर कह रही हैं कि ज्ञान के वचन बहुत भारी हैं। हे सुन्दरसाथजी! इनको चित्त देकर सुनना और मिलकर विचार करना।

एही चाल तुम चलियो साथजी, एही पांउ परवान जी।
प्रगट मैं तुमको पेहेले कह्या, भी कहूं निरवान जी।। ३ ।।

हे साथजी! तुम इसी रास्ते पर चलना। यही रास्ता ठीक है। मैंने तो पहले भी साफ-साफ कहा है। और भी निश्चय करके कहती हूं।

अब जिन माया मन धरो, तुम देखी अनेक जुगत जी।
कई कई विध कह्या मैं तुमको, अजहूं ना हुए त्रपत जी।। ४ ।।

तुमने सब कुछ देख लिया है, इसलिए अब माया में मन न लगाओ। मैंने तुम्हें कई तरह से समझाया है। अभी तक तुम्हारी तसल्ली नहीं हुई है (सन्तुष्ट नहीं हुए)।

जब लग तुम रहो माया में, जिन खिन छोड़ो रास जी।
पचीस पख लीजो धाम के, ज्यों होए धनी को प्रकास जी।। ५ ।।

अब जितने दिन तक माया में रहना पड़े, एक पल के लिए भी रास को नहीं छोड़ो। परमधाम के पच्चीस पक्षों में चित्त लगाओ, तब आपको धनी की पहचान हो जाएगी।

अनेक विध कही मैं तुमको, ढील करो अब जिन जी।
पांउ भरो ए वचन देखके, पेहेले बृज रास चलन जी।। ६ ।।

मैंने तुमको अनेक तरह से समझाया है कि अब देरी करने का समय नहीं है। इस वाणी को देखकर जैसे पहली बार बृज से रास में गए थे, उसी तरह से अब चलो, संसार छोड़ो।

रास प्रकास छोड़ो जिन खिन, जो बीतक अपनी परवान जी।
ए छल तुमसे क्योंए न छूटे, पर मैं ना छोडूं तुमें निरवान जी।। ७ ।।

रास के ज्ञान को एक पल के लिए भी मत छोड़ो। इसमें अपनी लीला है। यह संसार तुमसे किसी तरह से छूटेगा नहीं, पर मैं तुमको निश्चित रूप से नहीं छोडूंगी।

कहे इंद्रावती वचन पिउके, जिन देखाया धाम वतन जी।
अब कोटक छल करे जो माया, तो भी ना छूटे धनी के चरन जी।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी धनी के वचन कह रही हैं, जिन वचनों से परमधाम की पहचान होती है। अब करोड़ छल भी माया करे तो भी श्री राजजी के चरण नहीं छूटेंगे।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। २९ ।।

लीला को प्रकास होना–आत्मा को प्रकास उपज्यो

ना कछू मन में ना कछू चित, ना कछू मेरे हिरदे एती मत।
एक वचन सीधा कह्या न जाए, ए तो आयो जैसे पूर दरियाए।। १ ।।

न मेरे मन में और न चित्त में कोई विचार था और न मेरे हृदय में ही कोई इतना ज्ञान था। मेरी एक शब्द कहने की शक्ति नहीं थी, पर धनी की मेहर (कृपा) ऐसी हुई कि मानो नदी के पूर (प्रवाह) के समान ज्ञान अन्दर आ गया है।

Nijanand App

श्री सुंदरबाई धनी धाम दुलहिन, इंद्रावती पर दया पूरन।
हिरदे बैठ कहे वचन एह, कारन साथ किए सनेह।। २ ।।

सुन्दरबाई (श्यामा महारानी) श्री धाम-धनी की दुलहिन है। श्री इन्द्रावतीजी पर इनकी पूरी कृपा है। श्री इन्द्रावतीजी के अन्दर बैठकर यह वाणी सुन्दरसाथ के प्रेम के नाते कहलवाई है।

वचन एक केहेते इन पर, हम घरों जाए के लेसी खबर।
अद्रष्ट होए के कहे वचन, साथजी द्रढ करी लीजो मन।। ३ ।।

श्री श्यामाजी (देवचन्द्रजी) कहते थे कि हम घर में (श्री इन्द्रावतीजी के अन्दर बैठकर) जाकर सुन्दरसाथ की खबर लेंगे। यह वचन शरीर छोड़ते समय कहे थे। इसलिए, हे साथजी! इन वचनों को दृढ़ता से मन में ग्रहण करो।

आपन करी जो पेहेले चाल, प्रेम मगन बीते ज्यों हाल।
ए सब किया अपने कारन, एही पैंडा अपना चलन।। ४ ।।

हम पहली बार बृज में आए थे और जिस प्रेम में मग्न होकर खेले थे, वही रास्ता अपना बताया है और इसी पर चलना है।

दिखलाया सब प्रगट कर, साथ सकल लीजो चित धर।
ए जिन करो तुम हलकी बान, धनी कहावत अपनी जान।। ५ ।।

धनी अन्दर बैठकर सुन्दरसाथ को अपना समझकर यह सब कहला रहे हैं। सब प्रत्यक्ष दिखा रहे हैं। इसको सुन्दरसाथजी मन में धर लेना और इन वचनों को हलका न समझना (छोटा न समझना)।

कहियत सदा प्रबोध वचन, पर कबूं न बानी ए उतपन।
तिन कारन तुम सुनियो साथ, आपन में आए प्राणनाथ।। ६ ।।

संसार में बहुत से ज्ञानी ज्ञान देने वाले हैं, परन्तु यह वाणी कभी किसी के पास नहीं थी। इसलिए, हे सुन्दरसाथजी! सुनो, अपने बीच अपने प्राणनाथ आ गए हैं।

बोहोत सिखापन विध विध कही, पर नींद आड़े कछु हिरदे न रही।
नींद उड़ाओ देख नेहेचल रास, ज्यों हिरदे होए पिउ को प्रकास।। ७ ।।

हमको तरह-तरह से समझाया है, परन्तु माया के परदे के कारण हम उनके वचनों को हृदय में नहीं ले सके। अब नींद उड़ाकर अखण्ड रास को देखो, जिससे तुम्हें धनी की पहचान हो जाए।

अब नींद किएकी नाहीं ए बेर, पिउ आए बुलावन उड़ाए अंधेर।
पेहेले कह्या पिउ प्रगट पुकार, अंतर रहे केहेलाया आधार।। ८ ।।

यह समय सोने का नहीं है। धनी अन्धकार को उड़ाकर (अज्ञान हटाकर) बुलाने आए हैं। पहले भी पियाजी ने (देवचन्द्रजी के अन्दर बैठकर) पुकार-पुकार कर कहा।

मोहे एक वचन न आवे अस्तुत, पर सोभा दई ज्यों कालबुत।
अस्तुत की इत कैसी बात, प्रगट होने करी विख्यात।। ९ ।।

मुझे तो उनकी वन्दना (स्तुति) करने का शहूर (समझ) नहीं था। कहने वाले स्वयं धाम-धनी हैं। जैसे पत्थर की मूर्ति को भगवान की शोभा मिलती है, उसी प्रकार से मेरे तन को शोभा मिली है। कहने वाले श्री राजजी महाराज हैं, जिन्हें संसार में सुन्दरसाथ के लिए वाणी से जाहिर होना है।

Nijanand App

फल वस्त जो भारी वचन, जीव भी न कहे आगे मन।
सो प्रगट किए अपार, जो हुता अखंड घर सार।। १० ।।

श्री राजजी महाराज को पहचान कराने वाले भारी वचनों को जीव भी मन के आगे नहीं कहता। उन्होंने मेरे द्वारा सार वस्तु अपने घर श्री परमधाम की सब बातें जाहिर कर दीं।

प्रगट करी मूल सगाई, कई दिन आपन राखी छिपाई।
वचन बड़ा एक ए निरधार, श्री सुन्दरबाई केहेते जो सार।। ११ ।।

श्री श्यामाजी (देवचन्द्रजी महाराज) कहते थे कि हमारा नाता परमधाम का है जिसे अब तक हमने जाहिर नहीं किया था।

ए लीला होसी विस्तार, सूरज ढांप्या न रहे लगार।
ए लीला क्यों ढांपी रहे, जाकी रास धनी एती अस्तुत कहे।। १२ ।।

इस लीला का आगे चलकर बहुत विस्तार होगा। ज्ञान के सूर्य को ढांपा नहीं जा सकेगा। यह लीला कैसे छिप सकती है, जिसको धाम के धनी स्वयं इतना महत्व देते हैं?

ता कारन तुम सुनियो साथ, प्रगट लीला करी प्राणनाथ।
कोई मन में ना धरियो रोष, जिन कोई देओ महामती को दोष।। १३ ।।

इसलिए, प्यारे साथजी! सुनो श्री राजजी महाराजजी ने जाहिर होने के लिए ही यह लीला की है। यह बात सुनकर कोई दुःखी नहीं होना और श्री महामति को दोष नहीं देना।

ए तुम नेहेचे करो सोए, ए वचन महामती से प्रगट न होए।
अपने घर की नहीं ए बात, जो किव कर लिखिए विख्यात।। १४ ।।

यह बात निश्चित रूप से जानो कि यह वाणी श्री महामति से जाहिर नहीं हो सकती, क्योंकि परमधाम की यह रीति नहीं है कि अपने घर की बात कविता की तरह रचना करके कही जाए।

ए बोहोत विध मैं जानूं घना, जो किव नहीं ए काम अपना।
पर ए तो नहीं कछू किव की बात, केहेलाया बैठ हिरदे साख्यात।। १५ ।।

यह बात मैं अच्छी तरह मन में जानती हूं कि अपना काम कविता करना नहीं है। यहां तो कविता का कोई काम ही नहीं है। यह तो सब श्री राजजी महाराज की ही वाणी है जो हृदय में बैठकर स्वयं कहला रहे हैं।

ए वचन सबे आवेस में कहे, उत्तमबाईऐं भली विध ग्रहे।
यों कर कह्या आवेस दे, प्रगट लीला सबमें होसी ए।। १६ ।।

यह सब वाणी आवेश द्वारा कहलाई है, जिसे उत्तमबाई (ऊधो ठाकुर) ने अच्छी तरह ग्रहण किया (हवसा में साथ थे)। इस प्रकार अपने आवेश द्वारा कहलाया कि अब यह लीला सब में जाहिर हो जाएगी।

मैं मन मांहें जान्या यों, जो किव होसी तो खेलसी क्यों।
किव भी हुई वचन विचार, खेली इंद्रावती अनेक प्रकार।। १७ ।।

मैंने मन में ऐसा जाना कि यदि यह मेरी बनाई कविता होगी, तो सत का वर्णन कैसे होगा, किन्तु यदि देखा जाए तो एक तरह से कविता का रूप भी बन गया तथा सत को भी प्रगट किया। यह कहने की खूबी केवल श्री इन्द्रावतीजी में ही है।

Nijanand App

कारज यों सब हुए पूरन, श्री सुन्दरबाई की सिखापन।
हिरदे बैठ केहेलाया रास, पेहेले फेरे के दोऊ किए प्रकास।। १८ ।।

श्री श्यामाजी (सुन्दरबाई) ने हृदय में बैठकर बृज और रास का वर्णन कराया है और उसका सिखापन (शिक्षा) देकर हमारे सभी काम इस तरह पूर्ण कर दिए। (रास की लीलाओं से हमने वालाजी को अपने से अलग न करने की लीला और अभिमान करने पर दुःख मिलता है—अतः अभिमान कभी न करना, यह सीखो)।

सुनियो साथ तुम एह कारन, धनी ल्याए धाम से आनंद अति घन।
ज्यों ना रहे माया को लेस, त्यों धनिऐं कियो उपदेस।। १९ ।।

इसलिए, सुन्दरसाथजी! सुनो, यह कारण था कि धनी धाम से अत्यन्त आनन्द लेकर आए। तुम्हारे अन्दर माया तिल भर भी न रह जाए, इसलिए राजजी महाराज ने यह उपदेश किया है, सिखापन दी है।

ज्यों तुम पेहेले भरे पांउ, योंही चलो जिन भूलो दाउ।
भी देखो ए पेहेले वचन, प्रेम सेवा यों राखो मन।। २० ।।

जिस तरह से तुमने पहले बृज से रास में जाते समय माया छोड़ी थी, उसी रास्ते अब भी चलो। मौका हाथ से न जाने दो। पहले भी धनी ने यही वचन कहे हैं कि सुन्दरसाथ की सेवा बड़े प्रेम से करो।

अब कहूंगी तारतम रोसन कर, ए लीजो साथ नेहेचे चित धर।
कहे इंद्रावती अब ऐसा होए, साथ को संसे न रहेवे कोए।। २१ ।।

अब हे साथजी! तारतम ज्ञान की जागृत बुद्धि से कहती हूं, जिसको अपने चित्त में रखना। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब इस तारतम ज्ञान के जाहिर होने से तुम्हारा कोई संशय बाकी नहीं रह जाएगा।

बृज रास तुमको लीला कही, तारतम सों रोसनाई कर दई।
अब इन फेरे के कहूं प्रकार, सब साथ ढूंढ काढों निरधार।। २२ ।।

बृज और रास की लीला की पहचान तारतम ज्ञान से करा दी। अब इस जागनी ब्रह्माण्ड की हकीकत कहती हूं। जिससे सब साथ को निश्चित ही ढूंढ़ निकालूंगी।

॥ प्रकरण ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ ५१ ॥

श्री सुन्दरबाई के अंतरध्यान की बीतक

नोट—श्री श्यामा महारानीजी का ही नाम इस खेल में राजजी ने सुन्दरबाई रखा—"धरयो नाम बाई सुन्दर, निजवतन दिखाया घर।"

श्री सुंदरबाई स्यामाजी अवतार, पूरन आवेस दियो आधार।
ब्रह्मसृष्ट मिने सिरदार, श्री धाम धनीजी की अंगना नार।। १ ।।

श्री सुन्दरबाई श्यामाजी की अवतार हैं, (जिनकी लीला श्री देवचन्द्रजी के तन से हुई)। जिनको श्री राजजी महाराज ने अपना पूर्ण आवेश दिया। यह ब्रह्मसृष्टियों की सिरदार (प्रधान) हैं तथा धाम धनी की अंगना नार हैं।

Nijanand App